रेशम कोसा उत्पादन के मुख्य प्रतिबंधों में एक है रेशमकीट पालन में रोग। बहुप्रज और संकर नस्लों की तुलना में द्विप्रज रेशमकीट रोगों के प्रति अति संवेदनशील है। रोग निवारण हेतु रेशम कीटपालन में अनुपालन किए जाने वाले अनिवार्य अंग है, कीटपालन गृह व इसके परिसर और उपस्करों का समुचित विसंक्रमण और साफ-सफाई के उपाय। रोगग्रस्त रेशमकीट कीटपालन के दौरान वातावरण में रोगाणु फैलाते हैं और संक्रमण का स्रोत बन जाते है। रोग उत्पन्न करने वाले रोगाणुओं का नाश करने को विसंक्रमण कहते हैं। यह कई प्रकार से किया जा सकता है लेकिन विसंक्रामकों के रूप में रसायनों का उपयोग करते हुए की जाने वाली रासायनिक विधि सबसे प्रभावी हैं।

रेशमउत्पादन के लिए संस्तुत विसंक्रामक

- 0.3% बुझे चूने घोल में 2% विरंजकचूर्ण
- 0.5% बुझे चूने घोल में 2.5% सेनिटेक/सेरिक्लोर
- 0.05% अस्त्रा घोल
- 0.3% बुझे चूने घोल (वैकल्कि विसंक्रमण)
- 10% फोर्मलिन घोल (रोटरी चंद्रिकाओं के लिए विसंक्रमण)

विसंक्रमण घोल की आवश्यकता

कीटपालनगृह, इसके परिसर और उपस्करों के लिए आवश्यक विसंक्रमण घोल की कुल मॉग रेशमकीटपालनगृह के फ्लोर क्षेत्रफल के आधार पर आकलित की जाती है ।

क्षेत्रफल = लंबाई (लं) x चौडाई (चौ)

घोल: 1.6 ली/वर्ग मी क्षेत्रफल या 140 मिली/वर्ग फुट क्षेत्र फल

+10% परिसर या प्ररोह कीटपालन हेतु

+35% ट्रे कीटपालन हेतु या निम्नानुसार रेडि रेकनर का उपयोग करें।

Floor area		Disinfectant required at different roof height					
Sq.ft.	Sq.m.	10ft. / 3 m.	11 ft. / 3.35 m.	12ft. / 3.7 m	13 ft. / 4 m.	14 ft./ 4.3 m.	15 ft./ 4.6 m.
5	0.46	0.77	0.84	0.91	0.98	1.05	1.12
10	0.92	1.54	1.68	1.82	1.96	2.10	2.24
25	2.32	3.85	4.20	4.55	4.90	5.25	5.60
30	2.78	4.62	5.04	5.46	5.88	6.30	6.72
35	3.25	5.39	5.88	6.37	6.86	7.35	7.84
40	3.71	6.16	6.72	7.28	7.84	8.40	8.96
45	4.17	6.93	7.56	8.19	8.82	9.45	10.08
50	4.64	7.77	8.40	9.10	9.80	10.50	11.20
75	6.96	11.55	12.60	13.65	14.70	15.75	16.80
100	9.28	15.40	16.80	18.20	19.60	21.00	22.40
500	46.44	77.00	84.00	91.00	98.00	105.00	112.00
1000	92.88	154.00	168.00	182.00	196.00	210.00	224.00
2000	185.8	308.00	336.00	364.00	392.00	420.00	448.00
3000	278.7	462.00	504.00	546.00	588.00	630.00	672.00
4000	371.5	616.00	672.00	728.00	784.00	840.00	896.00
5000	464.4	770.00	840.00	910.00	980.00	1050.00	1120.00

विसंक्रमण घोल की तैयारी

0.3% बुझे चूने घोल में 2% विरंजक चूर्ण

निम्नलिखित घटकों को मिलनाते हुए 0.3% बुझे चूने घोल में 2% विरंजक चूर्ण घोल तैयार किया जाता है ।

संघटक	अपेक्षित मात्रा
विरंजक	2 कि.ग्रा.
चूर्णबुझा चूना	300 ग्रा.
जल	100 ली

0.5% चूना घोल में 2.5% सैनिटेक/सेरिक्लोर या 1.25% सैनिटेक सुपर

निम्नलिखित घटकों को मिलाते हुए 100 ली घोल तैयार किया जाता है ।

संघटक	परिमाण	संघटक	परिमाण
सैनिटेक/सेरिक्लोर	2.5 ली	सैनिटेक सुपर	1.25 ली
एक्टिवेटर क्रिस्टल	250 ग्रा	एक्टिवेटर क्रिस्टल	125 ग्रा
बुझा चूना	500 ग्रा	बुझा चूना	500 ग्रा
जल	97.5ली	जल	98.75 ली

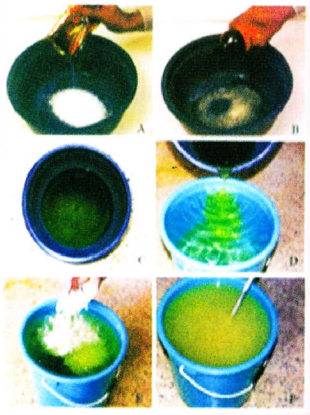

0.05% अस्त्रा घोल

100 लीटर पानी में 50 ग्रा अस्त्रा चूर्ण मिलाकर 100 लीटर 0.05% अस्त्रा घोल तैयार किया जाता है ।

0.3% बुझा चूना घोल

100 लीटर पानी में 300 ग्राम बुझा चूना मिलाते हुए 100 लीटर 0.3% बुझा चूना घोल तैयार किया जाता है ।

10% फोर्मोलिन घोल

पानी में एक तिहाई फोर्मलिन मिलाकर 10% फोर्मलिन घोल तैयार किया जाता है ।

विसंक्रमण समय सारणी

दिवस	कार्यकलाप
कीटपालन पूरा हो जाने पर	1. रोग ग्रस्त, गलित/ झीने कोसे इक्ट्ठा करके जला दें। 2. रोटरी चंद्रिकाओं को फोर्मलिन से धूमन द्वारा विसंक्रमित करें। 3. कीटपालनगृह और उपस्करों का संस्तुत विसंक्रामक से पहला विसंक्रमण करें ।
डिंभक अंतरण के 5 दिन पहले	4. उपस्करों को धोकर साफ करें । 5. उपस्करों को धूप में सुखा दें ।
डिंभक अंतरण के 4 दिन पहले	6. यदि अपेक्षित हो तो 0.3% बुझे चूने से कीटपालनगृह का विसंक्रमण करें ।
डिंभक अंतरण के 3 दिन पहले	7. संस्तुत विसंक्रामक से कीटपालन गृह और उपस्करों का दूसरा विसंक्रमण करें ।
डिंभक अंतरण के 2 दिन पहले	8. कीटपालन गृह के चारों तरफ 5% विरंजकचूर्ण डालें। 9. संवातन हेतु कीटपालन गृह की खिडकियाँ खोले ।
डिंभक अंतरण के 1 दिन पहले	10. डिंभक अंतरण के लिए

रोटरी चंद्रिकाओं का धूमन

विनाइल शीट पर कार्डबोर्डों तथा ढाँचों पर 10% फार्मलिन घोल छिड़कें। विनाइल शीट को मोड़कर 6 घंटों तक ओढ़कर बंद रखें।

कीटपालनगृह और उपस्करों का विसंक्रमण

पवर स्प्रेयर का उपयोग करते हुए संस्तुत विसंक्रामक से दो बार विसंक्रमण करें । यदि पिछले कीटपालन में गैसरी या वाइरल फ्लैचरी का तीव्र प्रकोप पाया जाए तो 0.3% बुझे चूने घोल का उपयोग करते हुए विसंक्रमण कर सकते हैं ।

कीटपालन के दौरान स्वास्थ्य संबंधी अनुरक्षण

कीटपालन गृह में प्रवेश करने के पहले और कीटपालन के बाद हाथ-पॉव को विसंक्रमित करें ।

- कीटपालन शय्या से रोग ग्रस्त/मृत/सामान्य से छोटे लार्वों को इकट्ठा करके जला दें।
- रेशमकीट शय्या अवशिष्ट को कूडा बास्केट/विनाइल शीट में डालकर पूरी तरह नष्ट कर दें।
- शहतूत पत्तियों को अलग विसंक्रमित कक्ष में सुरक्षित रखें।
- रेशमकीट को गुणात्मक शहतूत पत्तियाँ/प्ररोह खिलाएँ।
- संस्तुत तापमान, आर्द्रता और अंतराल में रेशम कीटपालन करें ताकि लार्वे स्वस्थ और संक्रमण प्रतिरोधी हो।
- जब लार्वे निर्मोक के लिए तैयार होते हैं तब कीटपालन शय्या में बुझा चूना डालें।
- समय सारणी के अनुसार अंकुश/विजेता और विजेता अनुपूरक डालें।

समय	बेड रोगाणुनाशी
प्रत्येक निर्मोक के बाद और अंतिम निरूप के तीसरे और पाँचवे दिन	अंकुश
प्रत्येक निर्मोक के बाद और अंतिम निरूप के चौथे दिन	विजेता
विजेता के अनुप्रयोग के अतिरिक्त चौथे निरूप के तीसरे दिन और अंतिम निरूप के दूसरे तथा छठे दिन	विजेता सप्लीमेंट

विषय:
एम.बालवेंकट सुब्बय्या एवं ए.आर. नरसिंह नायक

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:
निदेशक
केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
(आई एस ओ 9001:2008 प्रमाणित)
(केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार)
श्रीरामपुरा, मैसूरु-570 008
दूरभाष: 0821-2362757, 2362406
फैक्स: 0821-2362845 वेब:www.csrtimys.res.in
ई-मेल:csrtimys.csb@nic.in

Copies: 1000 November 2015

रेशमकीट पालन में विसंक्रमण एवं स्वास्थ्य अनुरक्षण पर प्रौद्योगिकी

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
(आई एस ओ 9001: 2008 प्रमाणित)
केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
श्रीरामपुरा, मैसूरु-570 008